UNESCO WORLD HERITAGE SITES IN INDIA - III

"Cultural Sites"

Department of Posts has been conducting Stamp Design competitions since 2015 to commemorate Independence Day, Republic Day and Children's Day at the National level. Based on the prize-winning entries, stamps are designed and released to mark the occasion. This year too, Department of Posts conducted a nationwide Photography contest for Stamp Design, on the theme UNESCO World Heritage Sites in India (Cultural). The first three winners are Ms Sanya Khandale, Ms Madhu Tripathi and Ms Poonam Amol Bhosale. Five consolation prize winners are Sr Jousse, Mr Saksham Saxena, Mr Hardik Kansara, Ms Arishna Kamran and Mr Atul Padia. There are 38 World Heritage Sites located in India. These include 30 Cultural sites, 7 Natural sites and 1 Mixed site.

One of the prominent landmarks of the **Historic City of Ahmadabad** a UNESCO World Heritage site, the Sarkhej Roza is known for its rich history and reverence. The architecture of the complex is credited to Azam and Muazzam Khan; two Persian brothers who are buried in the tomb near Vasna, Ahmedabad. Like many monuments built during that period, the Sarkhej Roza fused both non-Indian and Indian principles of architecture. In its architecture, Sarkhej Roza is an example of the early Islamic architectural culture of the region, which fused Islamic stylistic influences from Persia with Indian Hindu and Jain features to form a composite Indo-Saracenic architectural style.

The Church of Bom Jesus is a Roman Catholic basilica located in Goa, and is part of the **Churches and Convents of Goa** UNESCO World Heritage Site. The basilica holds the mortal remains of St. Francis Xavier. 'Bom Jesus' (literally, 'Good (or Holy) Jesus') is the name used for the Ecce Homo in the countries of Portuguese colonization. Construction work on the church began in 1594. The church was consecrated in May 1605 by the archbishop, Dom Fr. Aleixo de Menezes. This is one of the oldest churches in Goa and in India. The floor is of marble inlaid with precious stones. Apart from the elaborate gilded altars, the interior of the church is simple.

The Qutb Minar, is a victory tower that forms part of the **Qutb Minar and its Monuments, Delhi,** a UNESCO World Heritage Site. Qutubuddin Aibak, at that time a deputy of Muhammad of Ghor, but after his death, founder of the Delhi Sultanate, started construction of the Qutb Minar's first storey in 1199. It has a height of 72.5 meters, making it the tallest minaret built of bricks in the world. The surface is elaborately decorated with inscriptions and geometric patterns. The tower has five superposed storeys. The lower three comprise fluted cylindrical shafts or columns of pale red sandstone, separated by flanges and by storied balconies. The fourth column is of marble, and is relatively plain. The fifth is of marble and sandstone. The whole tower contains a spiral staircase of 379 steps.

Located in Madhya Pradesh, **Khajuraho Group of Monuments** is a famous UNESCO World Heritage site renowned for a group of Hindu and Jain temples, well known for their Nagara style symbolism. The Javari temple is one of the most prominent of all of these temples in the Khajuraho complex. It was built between 975 and 1100 A.D. The temple is dedicated to the Hindu deity Vishnu. It has well-proportioned architecture, with a sanctum, vestibule, mandapa and portico, but without pradakshinapatha. It has Makara Torana (Capricorn Arch) and shikhara (top). It has three bands of carved sculptures on the outer wall. The entrance gate of sanctum has sculptures depicting nava-graha on the top. Along with nava-graha sculptures, sculpture of the Hindu deities Brahma, Vishnu and Shiva can also be seen.

Group of Monuments at Pattadakal is a complex of 7th and 8th century AD Hindu and Jain temples in northern Karnataka. Located on the west bank of the Malaprabha River in Bagalakote district, this UNESCO World Heritage site is 14 miles (23 km) from Badami and about 6 miles (9.7 km) from Aihole, both of which are historically significant centres of Chalukya monuments. The Hindu temples are generally dedicated to Shiva, but elements of Vaishnavism and Shaktism theology and legends are also featured. The friezes in the Hindu temples display various Vedic and Puranic concepts, depict stories from the Ramayana, the Mahabharata, the Bhagavata Purana, as well as elements of other Hindu texts, such as the Panchatantra and the Kirātārjunīya. The Jain temple is only dedicated to a single Jina. A number of inscriptions in the old Kannada language have been found at the complex.

Department of Posts is glad to issue a set of five Commemorative Postage Stamps and a Miniature Sheet on UNESCO World Heritage Sites in India-III. The stamps have been designed based on the photographs of the prize-winning entries.

Credits:

Stamps/Miniature Sheet/FDC/ Brochure	:	Smt. Nenu Gupta. Based on the photographs of the prize-winning entries.
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Shri Pallab Bose

डाक विभाग
Department of Posts

स्वतंत्रता दिवस 2020 INDEPENDENCE DAY

विवरणिका BROCHURE

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल – III

"सांस्कृतिक स्थल"

डाक विभाग, वर्ष 2015 से स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और बाल दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय स्तर की डाक–टिकट डिजाइन प्रतियोगिताओं का आयोजन करता रहा है। इन प्रतियोगिताओं की पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टियों के आधार पर संबंधित अवसर पर डाक–टिकट जारी किए जाते हैं। इस वर्ष भी डाक विभाग ने डाक–टिकट डिजाइन हेतु एक देशव्यापी फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका विषय यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (सांस्कृतिक) था। प्रथम तीन पुरस्कार विजेता सुश्री सान्या खंडाले, सुश्री मधु त्रिपाठी, सुश्री पूनम अमोल भोसले हैं। पांच सांत्वना पुरस्कार विजेता सि. जोसे, श्री सक्षम सक्सेना, श्री हार्दिक कंसारा, सुश्री आरिशना कामरान और श्री अतुल पाडिया हैं। भारत में 38 विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें 30 सांस्कृतिक स्थल, 7 प्राकृतिक स्थल और 1 मिश्रित स्थल है।

ऐतिहासिक शहर, अहमदाबाद के सबसे प्रसिद्ध स्थानों में से एक है, सरखेज रौज़ा। यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल अपने समृद्ध इतिहास के लिए जाना जाता है और जनसामान्य में इसे लेकर काफी श्रद्धा भाव है। सरखेज रौज़ा परिसर की वास्तुशिल्पीय परिकल्पना का श्रेय आजम और मुअज्जम खान को जाता है। फारस मूल के ये दोनों भाई वसना, अहमदाबाद के निकट मकबरे में दफन हैं। अपने दौर के अनेक स्मारकों की भांति सरखेज रौज़ा के निर्माण में गैर–भारतीय के साथ–साथ वास्तुशिल्प के भारतीय सिद्धांत का भी मिला–जुला इस्तेमाल है। अपनी वास्तुशिल्पीय शैली के लिहाज से सरखेज रौज़ा इस क्षेत्र की इस्लामी वास्तुशिल्पीय संस्कृति के आरंभिक रूप की मिसाल है, जिसमें फारस के खालिस इस्लामिक अंदाज के साथ–साथ भारतीय हिन्दू और जैन विशेषताओं को भी इतनी खूबसूरती से समाया गया है कि यह परिसर भारतीय–इस्लामी वास्तुशिल्पीय शैली का उत्कृष्ट नमूना प्रतीत होता है।

गोवा के चर्च और कॉन्वेंट जो एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, का अभिन्न अंग, चर्च ऑफ बोम जीसस, एक रोमन कैथोलिक बेसिलिका है। इस बेसिलिका में सेंट फ्रांसिस जेवियर के अवशेष संरक्षित हैं। 'बोम जीसस' (जिसका शाब्दिक अर्थ, 'भले (या पवित्र) जीसस') के नाम का इस्तेमाल पुर्तगाल साम्राज्य के अधीन आने वाले देशों के एक्के होमो वर्ग के लिए किया जाता है। इस गिरिजाघर का निर्माण कार्य 1594 में शुरू हुआ और मई, 1605 में आर्चबिशप डोम फादर एलेक्सियो डी मेनेजेस ने इसे प्रतिष्ठित किया। यह चर्च, गोवा ही नहीं समस्त भारत के सबसे प्राचीनतम चर्चों में से एक है। इसका फर्श, कीमती पत्थरों से सुसज्जित मार्बल से बना है। इस गिरिजाघर की वेदिकाओं का डिजाइन अत्यंत खूबसूरत है और इसकी भीतरी सजावट में सादगी का भाव प्रधान है।

कुतुब मीनार एक फतह मीनार है। **दिल्ली स्थित कुतुब मीनार और इसके स्मारक स्थल** प्रसिद्ध यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं। कुतुब मीनार की पहली मंजिल का निर्माण कार्य कुतबुद्दीन ऐबक ने 1199 में शुरू किया। कुतबुद्दीन ऐबक, मोहम्मद गोरी के सेनापति थे। परंतु गोरी की मृत्यु के बाद ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की। कुतुब मीनार की प्रथम मंजिल का निर्माण वर्ष 1199 में आरम्भ हुआ। कुतुब मीनार की ऊंचाई 72.5 मी. है। यह विश्वभर में ईंटों से बनी सबसे ऊंची मीनार है। इसकी सतह पर महीन सजावटी काम है, जिसमें अभिलेखों के साथ–साथ ज्यामितीय आकारों का इस्तेमाल किया गया है। इस मीनार की एक के ऊपर एक 5 मंजिलें हैं। इसकी निचली तीन मंजिलों में बेलनाकार शाफ्ट या हल्के लाल रंग के बलुआ पत्थर के स्तंभ हैं, जिन्हें उभरे किनारों से अलग किया गया है और बाल्कनियां बनाई गई हैं। चौथा स्तंभ, मार्बल से बनाया गया है और इसका डिजाइन अपेक्षाकृत सादा है। मीनार का पांचवा स्तंभ मार्बल और बलुआ पत्थर से निर्मित है। इस पूरी मीनार में 379 घुमावदार सीढ़िया हैं।

मध्य प्रदेश स्थित **खजुराहो स्मारक स्थल** प्रसिद्ध यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, जो नागर शैली की प्रतीकात्मकता से सजे हिन्दू और जैन मंदिरों के लिए सुविख्यात है। जावड़ी मंदिर, खजुराहो परिसर के सबसे प्रमुख मंदिरों में गिना जाता है। इसका निर्माण 975 से 1100 ई. के बीच हुआ है। यह मंदिर, हिन्दुओं के प्रधान देव, भगवान विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर का वास्तुशिल्प अत्यंत संतुलित है, जिसमें गर्भगृह, अर्द्ध मंडप, मंडप और बरामदा है, परंतु कोई प्रदक्षिणापथ नहीं है। इस मंदिर का मुख्य आकर्षण अलंकृत मकर–तोरण और इसका शिखर है। इसकी बाहरी दीवार पर तीन पट्टियों में मूर्तियां उकेरी गई हैं। मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार के ऊपरी हिस्से पर नवग्रहों को दर्शाती मूर्तियां हैं। नवग्रह मूर्तियों के साथ–साथ हिन्दू देवताओं – ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूतियां भी देखी जा सकती हैं।

पट्टाडकल के स्मारक स्थल, उत्तरी कर्नाटक स्थित जैन मंदिरों का एक परिसर है, जिसका निर्माण 7वीं और 8वीं ई. में किया गया। बागलकोट जिले में मालप्रभा नदी के पश्चिमी तट पर स्थित यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, बदामी से 14 मील (23 कि. मी. की दूरी) और ऐहोल से 6 मील (9.7 कि. मी.) की दूरी पर स्थित हैं। बदामी और ऐहोल, चालुक्य स्मारकों के लिहाज से ऐतिहासिक महत्व के केन्द्र हैं। इस परिसर के हिन्दू मंदिर आमतौर पर भगवान शिव को समर्पित हैं, परंतु इनमें वैष्णव और शाक्त परंपरा के आयामों तथा कथाओं को भी दर्शाया गया है। इन मंदिरों में विभिन्न वैदिक और पौराणिक अवधारणाओं को मूर्त रूप दिया गया है, जिसमें रामायण, महाभारत, भागवत पुराण के साथ–साथ अन्य हिन्दू ग्रंथों जैसे पंचतंत्र और किरातार्जुनीय की कथाओं तथा आयामों का भी चित्रण है। परिसर का जैन मंदिर एक ही जिन को समर्पित है। इस परिसर में कन्नड भाषा की प्राचीन शैली के शिलालेख भी देखने को मिलते हैं।

डाक विभाग, भारत के यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, श्रृंखला–।।। विषय पर 5 स्मारक डाक–टिकट तथा एक मिनियेचर शीट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। डाक–टिकट, पुरस्कृत प्रविष्टियों के चित्रों के आधार पर डिजाइन किए गए हैं।।

आभार:

डाक–टिकट / मिनियेचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	:	श्रीमती नीनू गुप्ता, प्रतिभागियों से प्राप्त प्रविष्टियों के आधार पर
विरूपण कैशे	:	श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ	:	श्री पल्लव बोस

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे (5)
Denomination	:	500 p (5)
मुद्रित डाक टिकटें	:	500000 प्रत्येक
Stamps Printed	:	500000 each
मुद्रित मिनियेचर शीट्स	:	110000
Miniature sheets printed	:	110000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00